



श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री



एक जिला एक खेल
जिम्नास्टिक



एक जिला एक पर्यटन
मेहरानगढ़ दुर्ग

एक जिला एक उत्पाद
लकड़ी के फर्नीचर

एक जिला
एक वनस्पति प्रजाति
जाल

एक जिला एक उपज
जीरा

पंच गौरव जिला पुस्तिका



जिला : जोधपुर
जिला प्रशासन, जोधपुर



माननीय मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा जोधपुर में आयोजित
‘पंच गौरव’ के शुभारम्भ कार्यक्रम में



मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिन्हित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

भजन लाल शर्मा
(भजन लाल शर्मा)



क्या है पंच गौरव



'पंच-गौरव' से राजस्थान में विकास की नई दिशा

राज्य सरकार कार्यकाल के एक वर्ष प्रदर्शनी और 'पंच-गौरव' कार्यक्रम का शुभारम्भ

राजस्थान सरकार के कार्यकाल का एक वर्ष पूरा होने पर, विभिन्न जिलों में "एक वर्ष परिणाम उत्कर्ष" थीम पर प्रदर्शनी आयोजित की गई। इसमें मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार की उपलब्धियों और विकास कार्यों को प्रदर्शित किया गया। वहीं समारोह में विकास पुस्तिका विमोचन के साथ-ही प्रदेशभर में पंच-गौरवी विकास को बढ़ावा देने के लिए पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इस कार्यक्रम के तहत राज्य सरकार हर जिले में एक उपज, एक वनस्पतिक प्रजाति, एक उत्पाद, एक पर्यटन स्थल और एक खेल पर विशेष ध्यान केंद्रित कर रही है। इन पांच तत्वों को प्रत्येक जिले का पंच-गौरव माना जाएगा, जिससे स्थानीय संसाधनों और संस्कृति को प्रोत्साहन मिलेगा और प्रदेश का समग्र विकास सुनिश्चित होगा।



उपज

सीतापल, भजवाईन, आम, कलौंजी, मक्का, मेथी, किन्नू, ग्वारपाठी, गुलाब, सौंफ, गेहूं, संतरा, चना, व्याज, सरसो, धनिया, लहसुन, धन, आबला, मटर, गाजर, शहद, आलू, तिल, अमरुद, इसबोल, अनार, जीरा, पपीता, खजूर, मेहंदी



उत्पाद

ग्रेनाइट एवं मार्बल के उत्पाद, वेवा आभूषण, बीकानेरी नमकीन, कृषि आधारित उत्पाद, लकड़ी के उत्पाद, सरसों तेल, कपास के उत्पाद, कवार्टज एवं फेल्डस्पार पाउडर, टेक्सटाइल उत्पाद, पान मेथी (मसाला), स्लेट स्टोन के उत्पाद, कोटा डोरिया, गार्लिक प्रोडक्ट, चावल, कोटा स्टोन के उत्पाद, अंटीमार्बाईल पार्ट्स, पर्टर के उत्पाद, रसनाभूषण, लकड़ी के हस्तशिल्प उत्पाद, लकड़ी के फर्नीचर, फेल्डस्पार के उत्पाद, ब्लॉक प्रिंटिंग आधारित उत्पाद, ब्लू पांटरी, स्टोन आधारित उत्पाद, सेंडस्टोन के उत्पाद, खीरपोहन, अमरुद के उत्पाद, कशीदाकारी, टेक्सटाइल उत्पाद, लकड़ी के फर्नीचर, सोनामुखी के उत्पाद, मसाले, येलोस्टोन के उत्पाद

राजस्थान के 'पंच-गौरव'



खेल

तैराकी, कबड्डी, हॉकी, फुटबाल, कुश्टी, एथलेटिक्स, तीरंदाजी, बास्केटबाल, वॉलीबाल, क्रिकेट, टाइक्वांडो, बॉक्सिंग, जिमनास्टिक



प्रजाति

बांस / बेम्बू, बील, सागवान, महुआ, तेंदु, नीम, पलाश, रोहिडा, शीशम, फोग, बकायन, वेव, जामुन, करज, नीम, खेजड़ी, अमलतास, खैर, चिरोजी, धोक, सागवान, अर्जुन, ढाक, लेसुआ, अरडू, गणाल, शीशम, कदम्ब, बरगद, पीपल, रोहिडा, पीलू, जाल, महुआ, रोड़ा



पर्यटन स्थल

फतेहसागर एवं पिछोला झील, चित्तौड़गढ़ दुर्ग, बेगेश्वर धाम, त्रिपुरा सुंदरी मंदिर, सीतामाता बन्द्योधु आश्यारण, कुम्भलगढ़, जयसमंद झील, करणी माता मंदिर, गोगमण्डी मंदिर, सालासर बाजाजी मंदिर, हिंदुगढ़ कोट, बूद्धा जोहड़, पृष्ठक तीर्थ, केकड़ी पुराना शहर, टोडगढ़, माडलगढ़ किला, जहाजपुर जैन मंदिर, मीरावाई स्मारक, तेजाजी मंदिर, डिङ्गी कल्याण जी, चम्बल रिवर फ्रन्ट, रामगढ़ क्लेटर, तारागढ़ दुर्ग, गागरेन दुर्ग, सरिसका टाडगर रिजर्व, मेहंदीपुर बालाजी मंदिर, आमेर दुर्ग, लोहगढ़, खादू श्याम जी मंदिर, मनसा माता, सांपर झील, श्री दादूदयाल मंदिर, बैराठ, तिजारा जैन मंदिर, केवलादेव नेशनल पार्क, दीग महल, मचकुंड, कैलदेवी मंदिर, कुशलगढ़ लेक के बाबा खाटूश्याम मंदिर, रणथंभौर नेशनल पार्क, किराड़ मंदिर, नाकोडा जैन मंदिर, मेहरानगढ़ दुर्ग, खीरन, रणखार, सुंदुध माता मंदिर, ओरियाँ गांव, जैसलमेर दुर्ग, रणकपुर जैन मंदिर, ओसिया



राजस्थान के पंच गौरव की परिकल्पना और शुभारंभ कार्यक्रम

राजस्थान, भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमी हिस्से में स्थित एक अत्यंत समृद्ध और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण राज्य है। यहां की ऐतिहासिक धरोहर, धार्मिक स्थलों और सांस्कृतिक विविधताओं ने इसे वैश्विक मानचित्र पर एक विशेष स्थान दिलाया है। राज्य सरकार के दृष्टिकोण में, राज्य के समग्र विकास को और भी अधिक मजबूत बनाने के लिए एक नई पहल की आवश्यकता महसूस की गई। इस पहल के तहत, 'पंच-गौरव' नामक एक कार्यक्रम की परिकल्पना की गई जो राजस्थान के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है।

इस कार्यक्रम के शुभारंभ से न केवल राजस्थान के प्रत्येक जिले को एक नई पहचान मिलेगी बल्कि राज्य के विभिन्न संसाधनों और विशेषताओं का उपयोग कर विकास को नया आयाम मिलेगा। इस लेख में हम 'पंच-गौरव' के महत्व, इसके शुभारंभ कार्यक्रम और इसके उद्देश्य की विस्तृत चर्चा करेंगे।

'पंच-गौरव' से राजस्थान में विकास की नई दिशा

'पंच-गौरव' शब्द का शाब्दिक अर्थ है पाँच गौरव, जो किसी विशेष उद्देश्य के तहत पाँच महत्वपूर्ण क्षेत्रों को पहचानने और प्रोत्साहित करने की परिकल्पना को दर्शाता है। राज्य सरकार ने 'पंच-गौरव' के तहत पाँच प्रमुख घटकों को चिन्हित किया है जिनमें हर जिले के लिए एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक उत्पाद, एक पर्यटन स्थल और एक खेल को प्रमुखता दी जाएगी। इन पाँच तत्वों को हर जिले का 'पंच-गौरव' माना जाएगा।

यह कार्यक्रम राजस्थान के विकास के एक नए दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। अब तक, विकास कार्यों में अक्सर बड़े नगरों और औद्योगिक क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जाता रहा है लेकिन 'पंच-गौरव' योजना का उद्देश्य हर जिले के स्थानीय संसाधनों और विशेषताओं को बढ़ावा देना है। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी और सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण भी होगा।

राज्य सरकार का मानना है कि यदि प्रत्येक जिले के 'पंच-गौरव' तत्वों को प्रोत्साहन दिया जाए तो इससे न केवल राजस्थान की अर्थव्यवस्था को एक नयी दिशा मिलेगी बल्कि यह राज्य के सांस्कृतिक और प्राकृतिक संसाधनों का भी संरक्षण और संवर्धन करेगा। इस कार्यक्रम के जरिए प्रत्येक जिले में अनुकूल पर्यावरण, कृषि, पर्यटन, खेल और संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा जिससे समग्र विकास की राह तैयार होगी।





राज्य सरकार कार्यकाल के एक वर्ष पर प्रदर्शनी और 'पंच-गौरव' कार्यक्रम का शुभारंभ

राजस्थान सरकार के कार्यकाल का एक वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में, विभिन्न जिलों में 'एक वर्ष परिणाम उत्कर्ष' (One Year Result Excellence) थीम पर प्रदर्शनी आयोजित की गई। यह प्रदर्शनी राज्य सरकार के द्वारा पिछले एक वर्ष में किए गए विकास कार्यों और उपलब्धियों को प्रदर्शित करने का एक महत्वपूर्ण मंच थी। माननीय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में, इस प्रदर्शनी में राज्य सरकार की उन योजनाओं और पहलों को प्रदर्शित किया गया जिनका उद्देश्य राज्य के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को नया आयाम देना था। प्रदर्शनी में सरकार की विभिन्न योजनाओं, कार्यक्रमों और उनके प्रभावों को प्रदर्शित किया गया जो राज्य में हर क्षेत्र में समृद्धि और विकास ला रहे हैं।

वहीं, इस मौके पर 'पंच-गौरव' कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ भी किया गया। माननीय मुख्यमंत्री ने राज्यभर के विभिन्न जिलों में इस कार्यक्रम को लागू करने की घोषणा की। इस कार्यक्रम की शुरूआत के साथ ही राज्य सरकार ने यह सुनिश्चित किया कि हर जिले के स्थानीय संसाधनों और विशेषताओं का सही उपयोग किया जाए और इस दिशा में सकारात्मक प्रयास किए जाएं।



इस कार्यक्रम के शुभारंभ समारोह में माननीय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि 'पंच-गौरव' कार्यक्रम केवल एक योजना नहीं है बल्कि यह राजस्थान के समग्र विकास की दिशा में एक लंबा कदम है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह कार्यक्रम राज्य के प्रत्येक जिले की विशेषताओं को उभारने और उन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में मदद करेगा।

कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री ने पंच-गौरव के प्रत्येक घटक की विस्तृत जानकारी दी और बताया कि कैसे यह कार्यक्रम स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करेगा। साथ ही, उन्होंने यह भी कहा कि इस योजना के जरिए राज्य की संस्कृति, कृषि, खेल, पर्यटन और वनस्पति के क्षेत्र में हर जिले को एक विशेष पहचान मिलेगी।



पंच-गौरव योजना के तत्व

राजस्थान राज्य में पंच-गौरव कार्यक्रम के तहत पांच प्रमुख तत्वों को चिन्हित किया गया है जिनमें हर जिले को एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक उत्पाद, एक पर्यटन स्थल और एक खेल को बढ़ावा देना है। इन पांच तत्वों को लेकर राज्य सरकार ने निम्नलिखित पहलों शुरू की हैं:-

- **एक उपज** - राजस्थान के प्रत्येक जिले में एक ऐसी प्रमुख उपज को चिन्हित किया जाएगा जो वहाँ की कृषि अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान करती हो। राज्य सरकार का लक्ष्य है कि इस उपज को अधिक उत्पादन और विपणन के लिए प्रोत्साहित किया जाए ताकि किसानों की आय में वृद्धि हो सके।
- **एक वनस्पति प्रजाति**- राजस्थान की जैव विविधता को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक जिले में एक ऐसी वनस्पति प्रजाति का चयन किया जाएगा, जिसे संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता है। इससे राज्य की जैविक विविधता को बचाने में मदद मिलेगी और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलेगा।
- **एक उत्पाद** - राज्य सरकार हर जिले के लिए एक विशेष उत्पाद को चिन्हित करेगी जो वहाँ के हस्तशिल्प, उद्योग या कारीगरी का हिस्सा हो। इस उत्पाद को बढ़ावा देने से स्थानीय कारीगरों और उद्योगों को आर्थिक रूप से सशक्ति किया जाएगा।
- **एक पर्यटन स्थल** - राज्य सरकार राजस्थान के प्रत्येक जिले में एक प्रमुख पर्यटन स्थल को चिन्हित करेगी और उसे प्रोत्साहित करने के लिए सुविधाओं का निर्माण करेगी। इससे पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा और राज्य की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।
- **एक खेल** - प्रत्येक जिले में एक खेल को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाए जाएंगे। इस खेल को विकसित करने के लिए खेल इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे जिससे राज्य के युवा खेलों में अपना नाम रोशन कर सकें।

पंच-गौरव कार्यक्रम के लाभ

- **स्थानीय विकास** - पंच-गौरव योजना का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह स्थानीय विकास को बढ़ावा देती है। प्रत्येक जिले में स्थानीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया जाएगा जिससे वहाँ के निवासियों का सीधे लाभ होगा।
- **आर्थिक समृद्धि**- इस कार्यक्रम के तहत हर जिले को एक विशेष उत्पाद, उपज, वनस्पति, पर्यटन स्थल और खेल पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा जो वहाँ की अर्थव्यवस्था को मजबूत करेगा।
- **संस्कृति और धरोहर का संरक्षण**- इस कार्यक्रम के माध्यम से राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर और परंपरागत उत्पादों को बढ़ावा मिलेगा जिससे राज्य की समृद्धि संस्कृति और इतिहास का संरक्षण होगा।
- **स्वस्थ जीवनशैली**- पंच-गौरव के तहत खेलों को बढ़ावा देने के कारण युवाओं को खेलों में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा जिससे उनकी शारीरिक और मानसिक फिटनेस में सुधार होगा।



- पर्यटन को बढ़ावा- राज्य के विभिन्न पर्यटन स्थलों को प्रोत्साहित करने से न केवल पर्यटकों की संख्या बढ़ेगी बल्कि राज्य की आर्थिक स्थिति को भी मजबूती मिलेगी।

निष्कर्ष

'पंच-गौरव' कार्यक्रम राजस्थान के विकास में एक मील का पत्थर साबित हो सकता है। यह राज्य की आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर को संरक्षित करने के साथ-साथ समग्र विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। राज्य सरकार की यह पहल राजस्थान के प्रत्येक जिले को एक नई दिशा देने और वहां की अनूठी विशेषताओं को पहचान दिलाने के लिए प्रेरित करती है। राज्य के समग्र विकास में इस प्रकार की योजनाओं का बड़ा महत्व है और यह आने वाले वर्षों में राजस्थान को एक नई पहचान दिला सकती है।





पंच गौरव-जिला जोधपुर

एक जिला एक खेल
जिम्नास्टिक



एक जिला एक पर्यटन
मेरानगढ़ दुर्ग



'पंच गौरव'
जोधपुर

एक जिला
एक वनस्पति प्रजाति
जाल



एक जिला
एक उत्पाद
लकड़ी के फर्नीचर



एक जिला एक उपज
जीरा



पंच गौरव कार्यक्रम -जोधपुर

परिचय:-

राजस्थान सरकार के कार्यकाल का एक वर्ष पूरा होने पर, विभिन्न जिलों में 'एक वर्ष परिणाम उत्कर्ष' थीम पर प्रदर्शनी आयोजित की गई। इसमें मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार की उपलब्धियों और विकास कार्यों को प्रदर्शित किया गया। वहीं इस समारोह में प्रदेशभर में पंच-मुखी विकास को बढ़ावा देने के लिए पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की गई। इस कार्यक्रम के तहत राज्य सरकार हर जिले में एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक उत्पाद, एक पर्यटन स्थल और एक खेल पर विशेष ध्यान केंद्रित कर रही है। इन पांच तत्वों को प्रत्येक जिले का पंच-गौरव माना जाएगा जिससे स्थानीय संसाधनों और संस्कृति को प्रोत्साहन मिलेगा और प्रदेश का समग्र विकास सुनिश्चित होगा।

उद्देश्य:-

राज्य के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रत्येक जिले की विशिष्टता और क्षमता का ध्यान रखते हुए, इस कार्यक्रम के माध्यम से जिले की सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान को सशक्त बनाया जा सकता है। 'पंच गौरव' कार्यक्रम की यह पहल प्रत्येक जिले में उसकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, कृषि और पर्यावरणीय विशेषताओं को समृद्ध बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक जिले को एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल के रूप में चिह्नित किया गया है ताकि जिले के संसाधनों का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जा सके।

जोधपुर के पंच गौरव:-

इस कार्यक्रम के तहत जोधपुर जिले में निम्नलिखित प्रमुख तत्वों को चिह्नित किया गया है:-

1. एक जिला एक उत्पाद - लकड़ी के फर्नीचर
2. एक जिला एक उपज - जीरा
3. एक जिला एक वनस्पति प्रजाति - जाल
4. एक जिला एक खेल - जिमनास्टिक
5. एक जिला एक पर्यटन स्थल - मेहरानगढ़ दुर्ग

संबंधित विभाग:-

इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने के लिए राज्य के विभिन्न विभागों का सहयोग प्राप्त है जिनमें उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, कृषि एवं उद्यानिकी विभाग, वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, खेल एवं युवा मामलात विभाग, तथा पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग शामिल हैं।

'पंच गौरव' कार्यक्रम न केवल जोधपुर जिले की पहचान को मजबूत करेगा बल्कि राज्य के हर जिले की विविधता और सामर्थ्य को बढ़ावा देकर उसे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाएगा।



एक जिला - एक उत्पाद (ODOP) - लकड़ी के फर्नीचर

परिचय

जोधपुर जिला विश्व में हस्तशिल्प का प्रमुख बाजार है। जोधपुर हैण्डीक्राफ्ट एसोसिएशन की ओर से जारी आँकड़ों के अनुसार जिले से जो निर्यात वर्ष 1998-99 में 300 करोड़ रुपये था, वो वर्ष 2018-19 में 2000 करोड़ रुपये के करीब आ गया है। इतना ही नहीं 500 करोड़ रुपये से अधिक के उत्पाद देश के अन्य हिस्सों में भी बेचे जाते हैं। हस्तशिल्प न्यूनतम पूँजी लागत वाला उद्योग है तथा जिले में कृषि के बाद सबसे अधिक रोजगार भी दे रहा है। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 20 लाख लोगों का जीवन यापन इस उद्योग से होता है। निर्यातोन्मुखी व बहुमूल्य विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाले हस्तशिल्प उत्पाद में से 95 प्रतिशत उत्पादों का निर्यात होता है। हस्तशिल्प उद्योग एक छोटे से स्थान में स्थापित किया जा सकता है तथा न्यूनतम अथवा प्रदूषण रहित उद्योग है। इस उद्योग (पेपरमेशी, घास आदि) में वेस्ट रिसाईकिल भी किया जाता है, अतः यह ईको फ्रेण्डली है। हस्तशिल्प उद्योग पारम्परिक विधाओं को संरक्षण देने वाला उद्योग है। इसके माध्यम से कला एवं संस्कृति के विकास को प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा है।



जोधपुर का हस्तशिल्प एवं लकड़ी का फर्नीचर अपनी उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध है, इसीलिए "एक जिला एक उत्पाद" योजना अंतर्गत चुना गया है। यह शहर लंबे समय से पारंपरिक कारीगरी का केंद्र रहा है जो राजस्थान की सांस्कृतिक और आर्थिक समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देता है। ओ.डी.ओ.पी. योजना के तहत हस्तशिल्प पर ध्यान केंद्रित करने का उद्देश्य कुशल कारीगरों की उपलब्धता, स्थापित आपूर्ति शृंखला और प्रामाणिक, हस्तनिर्मित लकड़ी के फर्नीचर और सजावटी वस्तुओं की बढ़ती वैश्विक मांग को देखते हुए किया गया है।

800 से अधिक निर्यात इकाइयों के साथ, यह क्षेत्र जोधपुर में सबसे बड़े रोजगार प्रदाताओं में से एक है जो हजारों कारीगरों और श्रमिकों को आजीविका प्रदान करता है। पंच गौत्र योजना इस क्षेत्र को प्रशिक्षण, प्रचार कार्यक्रमों और खरीददार-विक्रेता बैठकों जैसी संरचित पहलों के माध्यम से बढ़ावा देने और विकसित करने का लक्ष्य रखती है। यह दस्तावेज़ जोधपुर में हस्तशिल्प और फर्नीचर उद्योग को मजबूत और विस्तारित करने के लिए एक रणनीतिक रोड मैप प्रस्तुत करता है।



काष्ठ हस्तशिल्प ने तो जोधपुर को विश्व बाजार में स्थापित कर रखा है। जिले की इन इकाइयों में काम करने के लिए बाडमेर, पाली, जालौर, नागौर, जैसलमेर, सीकर, बीकानेर आदि स्थानों से भी लोग आते हैं। जिले में पाल शिल्प ग्राम, गायत्री नगर, प्रताप नगर, सांगरिया फाँटा, गणेशपुरा आदि स्थानों पर काष्ठ हस्तशिल्प का कार्य किया जाता है।

उद्देश्य

- कारीगरों और एमएसएमई को कौशल विकास और क्षमता निर्माण पहलों के माध्यम से सशक्त बनाना।
- लक्षित प्रचार कार्यक्रमों और खरीददार-विक्रेता बैठकों के माध्यम से बाजार की पहुंच को बढ़ाना।
- जोधपुर को उच्च गुणवत्ता वाले, निर्यात-योग्य लकड़ी के फर्नीचर और हस्तशिल्प के प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित करना।
- स्थानीय कारीगरों को राष्ट्रीय और वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं में एकीकृत करके सतत आर्थिक विकास सुनिश्चित करना।
- पारंपरिक कारीगरी को संरक्षित करना और आधुनिक तकनीकों को अपनाकर दक्षता और प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि करना।
- जोधपुर के हस्तशिल्प क्षेत्र की अंतरराष्ट्रीय पहचान को ब्रांडिंग, जीआई टैरिंग और गुणवत्ता प्रमाणन के माध्यम से बढ़ावा देना।



क्षमता निर्माण पहल

- कौशल विकास और प्रशिक्षण: डिजाइन नवाचार, गुणवत्ता सुधार, निर्यात प्रक्रियाएं और डिजिटल मार्केटिंग पर विशेष प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा। इसमें डीसी-एच, ईपीसी-एच एमएसएमई संस्थानों और उद्योग विशेषज्ञों का सहयोग लिया जाएगा।



- नवीन एवं डिजिटल टेक्नोलॉजी का प्रशिक्षण: डिजिटल एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए इन्वेंटरी प्रबंधन, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और डिजिटल भुगतान समाधानों पर प्रशिक्षण दिया जाएगा।
- क्लस्टर विकास: माइक्रो एंड स्मॉल एंटरप्राइजेज क्लस्टर डेवलपमेंट प्रोग्राम के तहत जोधपुर क्राफ्ट क्रिएशन फेडरेशन (लकड़ी क्लस्टर) की स्थापना की गई है। इसके अलावा, एक आर्ट मेटल हस्तशिल्प क्लस्टर विकसित किया जा रहा है।
- पैकेजिंग समाधान: भारतीय पैकेजिंग संस्थान या इसी तरह के संगठनों के सहयोग से पैकिंग मानकों में सुधार के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा।
- फर्नीचर परीक्षण प्रयोगशाला: फर्नीचर परीक्षण प्रयोगशाला हेतु ई.पी.सी.एच. का नोडल एजेंसी के रूप में प्रस्ताव डी.सी.एच. को भेजा गया है।



प्रचार कार्यक्रम और बाजार तक पहुंच

- प्रमुख प्रदर्शनियों में भागीदारी: राइंजिंग राजस्थान समिट, जोधपुर में ओ.डी.ओ.पी. उत्पादों की प्रदर्शनी।
- राजस्थान सरकार के एक वर्ष के कार्यकाल समारोह (मारवाड़ इंटरनेशनल सेंटर, पॉलिटेक्निक कॉलेज, जोधपुर) में ओ.डी.ओ.पी. प्रदर्शनी।
- पश्चिमी राजस्थान उद्योग हस्तशिल्प उत्सव 2025 (9-19 जनवरी 2025) रामलीला मैदान, जोधपुर) में ओ.डी.ओ.पी. प्रदर्शन। यह कार्यक्रम माननीय मुख्यमंत्री द्वारा उद्घाटित किया गया।
- आर्टिफैक्ट्स हस्तशिल्प एक्सपो, जोधपुर (23-26 जनवरी 2025) ट्रेड फैसिलिटेशन सेंटर) में ओ.डी.ओ.पी. और हस्तशिल्प प्रदर्शनी।
- ब्रांड बिर्लिंग और जी आई टैरिंग : जोधपुर के प्रमुख हस्तशिल्प उत्पादों के लिए जी आई टैरिंग को प्रोत्साहित किया जाएगा ताकि ब्रांडिंग और वैशिक पहचान को मजबूत किया जा सके।
- ऑनलाइन बाजार में एकीकरण : कारीगरों और एमएसएमई को GeM, AMAZON और Flipkart जैसे ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्मों पर शामिल होने में सहायता प्रदान की जाएगी ताकि डिजिटल बाजार में उनकी पहुंच बढ़ सके।



खरीददार-विक्रेता बैठकें और निर्यात प्रोत्साहन

- आई ई सी कोड शिविर: आई ई सी (Importer & Exporter Code) प्राप्त करने और समझने में कारीगरों और एमएसएमई की सहायता के लिए आई ई सी कोड शिविरों का आयोजन किया जाएगा।
- निर्यात दस्तावेजी करण प्रशिक्षण कार्यक्रम: वैश्विक व्यापार को सुगम बनाने के लिए निर्यात प्रक्रियाओं, अनुपालन और आवश्यक दस्तावेजों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।
- पैकेजिंग सुधार सेमिनार: पैकेजिंग नवाचार, ब्रांडिंग तकनीकों और अंतरराष्ट्रीय पैकेजिंग मानकों पर सेमिनार आयोजित किए जाएंगे।
- समर्पित खरीददार-विक्रेता बैठकें: ई.पी.सी.एच. के सहयोग से वार्षिक रूप से दो खरीददार-विक्रेता बैठकें आयोजित की जाएंगी जिसमें कम से कम 50 घरेलू या अंतरराष्ट्रीय खरीददारों की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी।
- अंतरराष्ट्रीय बाजार से जुड़ाव: वैश्विक व्यापार में लोंगों और बी2बी बैठकों में एमएसएमई की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी ताकि सीधे निर्यात संबंध स्थापित किए जा सकें और बाजार पहुंच बढ़ाई जा सके।

क्रियान्वयन और निगरानी

- हितधारकों का सहयोग: इस योजना को राजस्थान एमएसएमई विभाग, ईपीसीएच और जिला स्तरीय एजेंसियों के सहयोग से लागू किया जाएगा।
- वित्तीय सहायता और संसाधन: इस पहल के लिए सरकारी योजनाओं, ओ.डी.ओ.पी. फंड और कॉर्पोरेट सी.एस.आर. के माध्यम से वित्तीय सहायता प्राप्त की जाएगी।
- राज्य सरकार की ओ.डी.ओ.पी. नीति के अंतर्गत पात्र उद्यमियों एवं हस्तशिलियों को लाभान्वित किया जाएगा।
- नियमित समीक्षा: छमाही समीक्षा की जाएगी ताकि योजना के प्रभाव का मूल्यांकन किया जा सके और पंच गौरव के उद्देश्यों के साथ सरेखण सुनिश्चित किया जा सके।

ठोस लक्ष्य और परिणाम

- प्रशिक्षण: हर साल कम से कम 50 कारीगरों को कौशल विकास और डिजिटल साक्षरता में प्रशिक्षित किया जाएगा।
- कॉमन फैसिलिटी सेंटर: 2026 तक एम.एस.सी.सी.डी.पी. के तहत एक पूर्ण रूप से कार्यशील सी.एफ.सी. की स्थापना की जाएगी।
- डिजिटलाइजेशन: हर साल 50 कारीगरों को इन्वेंटरी प्रबंधन और ऑनलाइन बिक्री के लिए डिजिटल टूल



अपनाने में सहायता प्रदान की जाएगी।

- बाजार पहुंच: हर साल 30 जोधपुर-आधारित कारीगरों और एमएसएमई को राज्य/राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भाग लेने का अवसर दिया जाएगा।
- ई-कॉमर्स: 2026 तक 50 कारीगरों और एमएसएमई को ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म से जोड़ा जाएगा।
- खरीददार-विक्रेता बैठकें: वार्षिक रूप से 2 कारीदार-विक्रेता बैठकें आयोजित की जाएंगी जिनमें कम से कम 50 घरेलू या अंतरराष्ट्रीय खरीददारों की भागीदारी होगी।
- निर्यात तैयारियां: हर साल 50 एम.एस.एम.ई. इकाइयों को आई.ई.सी. कोड प्राप्त करने में सहायता प्रदान की जाएगी।
- निर्यात प्रोत्साहन: प्रत्येक वर्ष कम से कम 20 एम.एस.एम.ई. इकाइयों को अंतरराष्ट्रीय व्यापार में लों और नेटवर्किंग कार्यक्रमों के माध्यम से निर्यात संबंध स्थापित करने में सहायता दी जाएगी।

पंच गौरव योजना जोधपुर को लकड़ी के हस्तशिल्प और फर्नीचर का प्रमुख केंद्र बनाने की दिशा में काम कर रही है। सरकार, उद्योग और रणनीतिक पहलों के समन्वय से यह पहल सतत आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के साथ-साथ जोधपुर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करेगी।



एक जिला-एक उपज - जीरा फसल



परिचय

जीरा राजस्थान में रबी के मौसम में ली जाने वाली आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बीजीय मसाला फसल है। जीरा कम अवधि में पकने वाली मसाले की प्रमुख फसल है। इससे अधिक आमदानी होती है। जीरे की खेती के लिए शुष्क एवं साधारण ठण्डे मौसम की आवश्यकता होती है। जीरे की फसल के लिये जीवांश युक्त उचित जल निकास वाली दोमट मिट्टी उपयुक्त रहती है। जीरे का उपयोग सब्जियों, सूप, अचार, सॉस व पनीर को सुस्वादिष्ट बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। जीरे का उपयोग नमकीन, बिस्कुट, केक, अचार व चटनी बनाने में भी किया जाता है। जीरे के वाष्पशील तेल का उपयोग सुगन्धित साबुन व केश तेल बनाने में भी किया जाता है। देशी व आयुर्वेदिक दवाओं में जीरे का उपयोग होता है। जीरे के इन गुणों के कारण निर्यात की विपुल सम्भावनाएँ हैं।

जीरे का महत्व-

- जोधपुर जिले में जीरे का क्षेत्रफल वर्ष 2023-24 में 101450 हेक्टर में बुवाई एवं उत्पादन 63151 मैट्रिक टन हुआ।
- राजस्थान में 544863 हेक्टर में बुवाई एवं 230957 मैट्रिक टन उत्पादन हुआ।
- भारत में 869186 हेक्टर में बुवाई एवं 555789 मैट्रिक टन उत्पादन हुआ।
- जोधपुर जिले की मण्डियों में वर्ष 2023-24 में कुल आवक 149573 किंवटल हुई, इसमें से जीरा मण्डी जोधपुर में वर्ष 2023-24 में 106441 किंवटल जीरे की आवक हुई।



जीरे के निर्यात की सम्भावनाएं-

- धरेलू बाजार में जीरे की मांग बढ़ना एवं विदेशों में भारत के जीरे की मांग बढ़ने के कारण निर्यात की विपुल सम्भावनाएँ हैं।
- राजस्थान में वर्ष 2023-24 में जीरे का निर्यात 84475.41 टन हुआ।
- वर्ष 2023-2024 में भारत से जीरे का निर्यात 186508 मैट्रिक टन हुआ और इससे 4194 करोड़ रुपये प्राप्त हुये।
- भारत के जीरे का निर्यात अमेरिका, कनाडा, दक्षिण अमेरिका, चीन और गल्फ कन्ट्री के देशों में जाता है।



उद्देश्य

- पंच गौरव एक जिला एक उपज जीरा फसल कार्यक्रम के तहत जीरे फसल की उपज में वृद्धि एवं गुणवत्ता में बढ़ोतारी करने हेतु निम्नलिखित उद्देश्य हैं-
- किसानों को उन्नत खेती की जानकारी हेतु प्रशिक्षित करना।
- उन्नत तकनीकी की जानकारी हेतु साहित्य वितरण करना।
- कीट एवं व्याधि के प्रकोप से बचाने हेतु उद्यानिकी फसलों में समन्वित कीट/व्याधि प्रबंधन (आई.पी.एम.) की जानकारी प्रदान करना।
- जीरे फसल की उन्नत किस्म का बीज के मिनिकिट वितरण एवं फसल प्रदर्शन द्वारा उपज में वृद्धि लाना।
- समन्वित पौष्टक प्रबंधन द्वारा जीरे की उपज में गुणवत्ता में वृद्धि करना।
- प्रति ईकाई लागत कम करना एवं कृषक आय में वृद्धि करना।



તकनीકी दक्षता निर्माण -

- किसान मेला : जिला स्तरीय एक दिवसीय किसान मेले का आयोजन किया जायेगा जिसमें जिले के 1000 किसानों द्वारा भाग लिया जायेगा। मेले में जीरा फसल की तकनीकी जानकारी, उन्नत किस्मों, समस्या समाधान एवं प्रदेशनियों का आयोजन किया जायेगा।
- कृषक प्रशिक्षण : ग्राम पंचायत स्तर पर एक दिवसीय 20 कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया जायेगा जिसमें प्रति प्रशिक्षण में 30 किसानों द्वारा भाग लिया जायेगा। प्रशिक्षण में जीरा फसल की पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेज की जानकारी दी जायेगी।
- कृषक भ्रमण : किसानों को तकनीकी ज्ञान वृद्धि हेतु अन्तः जिला स्तरीय एवं अन्तर राज्य स्तरीय कृषक भ्रमण करवाया जायेगा। अन्तः जिला स्तरीय भ्रमण में कृषि अनुसंधान केन्द्र, काजरी इत्यादी संस्थानों का भ्रमण करवाया जायेगा। अन्तर राज्य स्तरीय कृषक भ्रमण में गुजरात क्षेत्र में ऊँझा जीरा मण्डी, कृषि संस्थानों का भ्रमण करवाया जायेगा।

जीरा उन्नत तकनीकी विकास -

- जीरा बीज मिनिकिट : जिले के किसानों को उन्नत किस्म जीरा बीज मिनिकिट का निःशुल्क वितरण किया जायेगा। जिससे किसानों की प्रति ईकाई उपज में वृद्धि होगी और किसानों की आय में बढ़ोतरी होगी।
- जीरा फसल प्रदर्शन : जिले के किसानों को जीरा फसल प्रदर्शनियों का विभागीय योजनाओं के अन्तर्गत प्राप्त दिशा-निर्देशानुसार आयोजन करवाया जायेगा जिसमें उन्नत किस्म के बीज, उर्वरक, पौध संरक्षण रसायन इत्यादी का अनुदानित दर पर किसानों को उपलब्ध करवाया जायेगा। फसल प्रदर्शन क्षेत्र में फील्ड डे का आयोजन किया जायेगा जिसमें फसल प्रदर्शन से जीरे की उन्नत खेती से किसानों को अवगत करवाया जायेगा।
- पौध संरक्षण उपकरण : जीरे फसल में कीट व्याधियों के प्रबंधन हेतु कीटनाशी, फफूंदनाशी, खरपतवारनाशी इत्यादी रसायनों के छिड़काव हेतु विभागीय योजनाओं के दिशा-निर्देशानुसार पौध संरक्षण उपकरण (बैटरी ऑपरेटेड नैप सैक्स स्प्रेयर) का अनुदानित दर पर किसानों को उपलब्ध करवाया जायेगा।

कृषक वैज्ञानिकी संवाद एवं साहित्य वितरण

- जिले के जीरा उत्पादित किसानों का कृषि अनुसंधान केन्द्र के कृषि वैज्ञानिकों/आचार्यों के साथ संवाद स्थापित करवाया जायेगा जिसमें जीरा फसल से सम्बन्धित तकनीकी ज्ञान व जीरा फसल से सम्बन्धित तकनीकी समस्या (यथा-समन्वित कीट व्याधि प्रबंधन, समन्वित पौष्क तत्व प्रबंधन इत्यादि) समाधान किया जायेगा। जीरा फसल की उन्नत खेती की जानकारी से सम्बन्धित पैम्पलेट्स का कृषकों को निःशुल्क वितरण करवाकर तकनीकी ज्ञान में बढ़ोतरी की जायेगी।



योजना का क्रियान्वयन एवं प्रबोधन -

- योजना के तहत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन एवं क्रियान्वयन पंच गौरव कार्यक्रम के तहत उपलब्ध बजट मद से किया जायेगा तथा योजना को सफल बनाने के लिये कृषि (विस्तार), उद्यान, कृषि विपणन, अनुसंधान केन्द्र, कृषि विश्वविद्यालय, काजरी इत्यादी विभागों का सहयोग लिया जायेगा। योजना का प्रबोधन कृषि विभाग (नोडल विभाग) द्वारा किया जायेगा।





एक जिला - एक वनस्पति प्रजाति जाल (Salvadora Persica) का संवर्धन



उद्देश्य

पंच गौरव एक जिला एक वनस्पति प्रजाति-जाल कार्यक्रम के तहत जाल वनस्पति की गुणवत्ता में बढ़ोतरी करने हेतु निम्नलिखित उद्देश्य है-

- जिले में जाल की विरासत एवं पर्यावरण का संरक्षण करना।
- आयुर्वेदिक औषधियाँ तैयार करने में इसके महत्व को बढ़ाना।
- रोजगार के अवसर में वृद्धि होना।

परिचय-

प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश में सर्वार्गीण विकास हेतु राज्य में पंच-गौरव कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है।

कार्यक्रम अंतर्गत राज्य में प्रत्येक जिले उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए “पंच गौरव” के रूप में एक जिला - एक वनस्पति प्रजाति के संबंध में जोधपुर में जाल के पौधे का चयन किया गया है।

बजट घोषणा बिन्दु संख्या 45 के द्वितीय बिन्दु के संबंध में एक जिला एक वनस्पति प्रजाति कार्यक्रम लागू कर प्रत्येक जिले के लिए विशेष नस्ल की पौधे यहाँ के पर्यावरण को देखते हुए चुना है।



कार्य योजना-

उपरोक्त विषय के संबंध में विस्तृत कार्य योजना 2025 के लिए निम्नलिखित है-

1. पौध तैयारी- जोधपुर जिले में उप वन संरक्षक, जोधपुर अधीन नर्सरियों (भूतेष्वर, लॉक्सवेल, डोली, औसियां, सेखाला, बागोरिया एवं मोगरिया नाडा) में लगभग 80 हजार जाल के पौधे तैयार किये जा रहे हैं।
2. आमजन की सहभागिता - जिले के राजकीय/गैर राजकीय संस्थाओं, स्काउट्स गार्ड्स, सामाजिक संगठनों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों, शिक्षण संस्थाओं एवं आमजन व अन्य द्वारा उपलब्ध स्थानों पर पौधारोपण किया जाकर उनका संरक्षण किया जायेगा। स्थानीय लोगों को जाल वृक्ष के महत्व इसके औषधीय उपयोग और पर्यावरणीय स्थिरता में इसकी भूमिका के बारे में जानकारी के लिए जागरूकता अभियान आयोजित किये जायेंगे।
3. आर्थिक उपयोगिता - जाल की छाल एवं पत्तियों का उपयोग काढ़ा बनाने के लिए किया जाता है साथ ही मोटापा, कोलेस्ट्राल समेत विभिन्न रोगों के लिए सेवन की सलाह दी जाती है। इन विशेष उद्देश्यों के लिए ब्लॉक स्तर पर केन्द्र बनाए जायेंगे और ऐसे उत्पादों की बिक्री को प्रोत्साहित किया जाएगा। प्रत्येक जिला स्तरीय कार्यक्रमों में भाग लेने वाले अतिथिगणों एवं सम्मानित प्रतिभागीगणों को उपहार स्वरूप जाल के पौधे भेंट किये जायेंगे।
4. स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा देना - वन विभाग द्वारा आयोजित पर्यावरण महोत्सव, हरियाली तीज जैसे प्रत्येक कार्यक्रम में विभाग द्वारा स्टॉल लगाए जायेंगे जिससे रोजगार के अवसर, महिला सशक्तीकरण, प्रयोज्य आय मे वृद्धि होगी। जे.एफ.एम.सी./एस.एच.जी./वी.एफ.पी.एम.सी. को आयुर्वेदिक औषधियां तैयार करने हेतु प्रशिक्षण दिया जायेगा।
5. इकोट्रूरिज्म (जाल पार्क) - जोधपुर जिले में जाल-थीम पर आधारित इको-पार्क स्थापित किये जायेंगे ताकि पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सके और वृक्ष के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा की जायेगी।



एक जिला एक खेल-जिम्नास्टिक



उद्देश्य

पंच गौरव एक जिला एक खेल- जिम्नास्टिक कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रतिभावान खिलाड़ियों को जिम्नास्टिक प्रोत्साहन एवं प्रशिक्षण प्रदान कर खेल प्रतिभाओं को तराशा जाता है।

प्रतिभावान युवाओं को इस खेल से जोड़ना।

ग्रामीण प्रतिभावान खिलाड़ियों को प्रशिक्षित कर राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाना।

कार्य योजना:-

- जिले के शहरी सहित विभिन्न ब्लॉकों में अलग-अलग विद्यालयों में लगभग 300 विद्यालयों में प्रशिक्षण हेतु उपयुक्त खिलाड़ियों की उपलब्धता बाबत प्रशिक्षकों द्वारा टेलेन्ट सर्च प्रोग्राम चलाया जाएगा जिसमें अलग-अलग आयु वर्ग के अनुसार खिलाड़ियों का चयन किया जाएगा। चयन ट्रायल में अधिक से अधिक खिलाड़ी आ सकें। इसके प्रेरणा स्वरूप चयन ट्रायल में आने वाले खिलाड़ियों को बतौर प्रोत्साहन टी-शर्ट दी जाएगी।
- यदि ग्रामीण अंचल के खिलाड़ी इस स्कीम में चयनित होते हैं तो ट्रेनिंग सेंटर के पास उनके लिए एक आवासीय छात्रावास उपलब्ध कराया जाएगा जिसमें रहने खाने की निःशुल्क सुविधा दी जाएगी।
- खिलाड़ियों को शिक्षा विभाग एवं राज्य क्रीड़ा परिषद की तर्ज पर आवासीय छात्रावास के साथ-साथ निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराई जाएगी।
- चैनपुरा स्टेडियम में इंडोर हॉल बैंडमिंटन खेल के साथ-साथ जिम्नास्टिक खेल प्रशिक्षण हेतु प्रयोग में लिया जाएगा।



जा रहा है। स्टेडियम में 2 बड़े हॉल हैं, जहां आर्टिस्टिक जिम्नास्टिक की फ्लोर एवं एक्रोबेटिक जिम्नास्टिक संपादित होंगे।

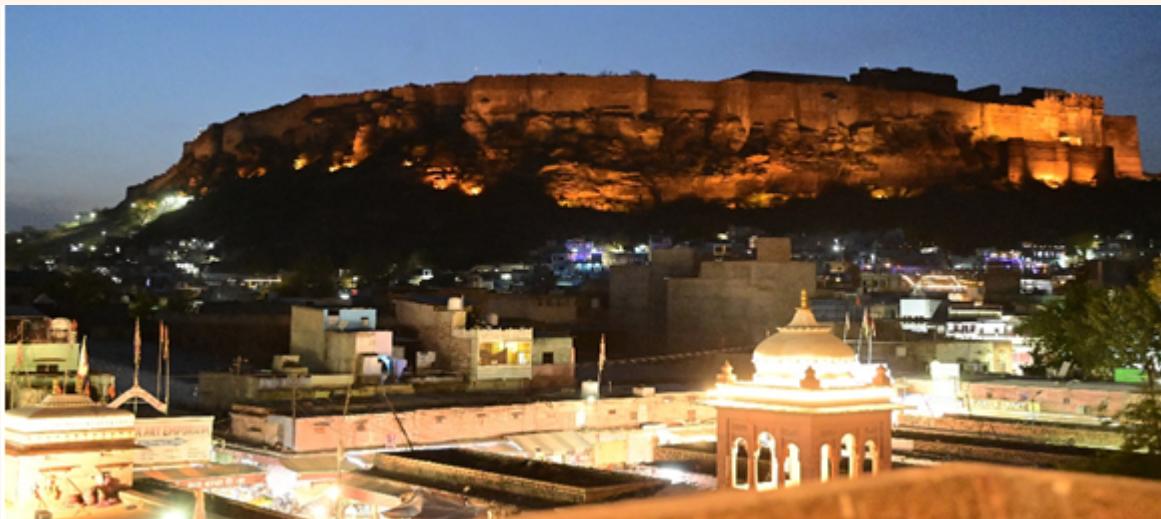
- वैकल्पिक स्थल के रूप में 2 स्थान प्रस्तावित हैं।
 - (अ) वर्तमान में बरकतुल्लाह खां स्टेडियम में जहां जिम्नास्टिक खेल का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, वहां एक 60X40X10 इंडोर हॉल या ओपन एरिया में फिक्स एवं मूवेबल जिम्नास्टिक उपकरणों को स्थापित कर सेन्टर शुरू करवाया जाना है। वर्तमान में कुल 3 प्रशिक्षकों को (1 पुरुनियुक्त एवं 2 अल्पकालीन) चयन कर बरकतुल्लाह स्टेडियम में पदस्थापित किया जाना है।
 - (ब) दुसरे विकल्प के रूप में शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय में वर्ष 2022 से राजस्थान राज्य क्रीड़ा संस्थान को स्थापित किया गया है। मुख्यालय से निर्देश प्राप्त करके या श्रीमान जिला कलक्टर महोदय एवं अध्यक्ष जिला क्रीड़ा परिषद जोधपुर के निर्देशों की पालना में इस स्कीम का क्रियान्वयन राज्य क्रीड़ा संस्थान में किया जा सकता है। जहाँ बड़े हॉल्स के साथ विस्तृत ओपन स्पेस एरिया हैं।

उच्च स्तरीय प्रशिक्षण हेतु योजना:-

1. सेंटर पर प्रशिक्षणरत खिलाड़ियों को विभिन्न जिलों/राज्यों/राष्ट्रीय स्तर पर स्कूली, फैडरेशन, खेलों इंडिया, नेशनल गेम्स में भाग दिलाया जाएगा।
2. सेंटर पर प्रशिक्षणरत खिलाड़ियों को उच्च स्तरीय प्रशिक्षण एवं एलीट प्लेयर्स का अभ्यास दिखाने के लिए एक सप्ताह के हिसाब से NSNIS पटियाला, LNIPE ग्वालियर, नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी इंफाल, शिमला NSNIS बैगलुरु में प्रशिक्षण हेतु रखा जाएगा ताकि प्रोग्रेशन/उन्नयन किया जा सके।
3. पूर्व में कर्नाटक, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली जैसे राज्यों के खेल नीति निर्धारक एवं खिलाड़ी राज्य की अलग-अलग अकादमियों के साथ अभ्यास सत्र आयोजित करते हैं। अतः चयनित खिलाड़ियों को समीपस्थ राज्यों के बेहतरीन अकादमी/ट्रेनिंग सेंटर पर अभ्यास मैच खिलायें जायेंगे।
4. सेंटर पर प्रशिक्षणरत खिलाड़ियों हेतु अभ्यास के दौरान चोट लगने पर उच्च स्तरीय रिहैबिलिटेशन सेंटर स्थापित किया जाएगा। जहाँ विशेषज्ञ, फिजियोथेरेपिस्ट की मदद से एडवांस्ड मेडिकल फिजियोथेरेपी मशीनरी स्थापित कर लोंग टर्म रिहैबिलिटेशन ट्रीटमेंट दिया जाएगा। रिहैब सेंटर स्थापित न होने तक राज्य क्रीड़ा संस्थान में स्थापित रिहैब सेंटर एवं विशेषज्ञों की मदद ली जाएगी।



एक जिला - एक पर्यटन स्थल - मेहरानगढ़ दुर्ग



परिचय

राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती है। जिले के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में पंच गौरव कार्यक्रम शुरू किया गया है। कार्यक्रम के अन्तर्गत जिले में उसकी विरासत एवं परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए "पंच-गौरव" के रूप में एक जिला-एक पर्यटन स्थल मेहरानगढ़ दुर्ग को चिन्हित किया गया है। ई. सन 1459 में जोधपुर जिले की स्थापना राव जोधा द्वारा की गई। भारतीय इतिहास में मारवाड़ रियासत का गैरवशाली स्थान रहा है। मारवाड़ राजवंश के विभिन्न शासकों द्वारा समय-समय पर विभिन्न स्मारकों का निर्माण कार्य करवाया। जोधपुर जिला पर्यटन की दृष्टि से विश्वपटल पर अपनी विशेष पहचान रखता है। इस कार्यक्रम के द्वारा जिले में पर्यटन को बढ़ावा दिलाने हेतु महत्वपूर्ण कार्य किये जा सकते हैं।

दुर्ग में प्रवेश हेतु विभिन्न द्वार बने हुये हैं जिनका निर्माण अलग-अलग महाराजाओं ने अपने शासन काल में करवाया था, जिसमें जयपोल तथा फतेहपोल का निर्माण महाराजा अजीतसिंह द्वारा एवं लोहापोल प्रवेश द्वार का निर्माण राव मालदेव द्वारा करवाया गया था। किले के अन्य प्रवेश द्वारों में ध्रुवपोल, सूरजपोल, इमरतपोल तथा भैरोंपोल हैं। इस प्रकार दुर्ग में कुल सात द्वार बने हुये हैं।

जोधपुर का किला अपने अनूठे स्थापत्य और विशिष्ट संरचना के कारण अपनी विशेष पहचान रखता है जिसमें



इस दुर्ग के विभिन्न महल अपनी अनूठी कला के लिये विश्वविख्यात हैं। किले में स्थित प्रमुख महलों में फूलमहल, ख्वाबगाह का महल, तख्त विलास, दौलतखाना, चौखेलाव महल, बिचला महल, स्नीवास आदि हैं। दुर्ग की सुरक्षा के लिये सिलहखाना, तोपखाना भी किले में स्थित हैं। इस दुर्ग एवं नगर के चारों ओर एक सुरक्षा प्राचीर बनी हुई है। जिसमें 101 विशाल बुर्ज और 6 दरवाजे हैं।

इसके अतिरिक्त विस्मयकारी संग्रह जैसे पालकियों, हथियों के हौद, विभिन्न शैलियों के लघुचित्र, संगीत वाद्य, शाही पोशाकों, फर्नीचर, तोपों इत्यादि का आश्चर्यजनक संग्रह है।

किले में दो मुख्य प्रवेश द्वार फतेहपोल व जयपोल और कई आंतरिक द्वार हैं। रियासत काल के दौरान किले में प्रवेश के लिए राज्य द्वारा तय किये गये नियम और कानून थे। अब यह एक संरक्षित स्मारक है और टिकट के माध्यम से प्रवेश की अनुमति है।

विस्तृत कार्य योजना:-

1. प्रमुख पर्यटन स्थलों पर अनिवार्य बुनियादी ढांचे का विकास-
 - कायलाना झील- सी.सी.टी.वी. कैमरा, पर्यटक सहायता बल की घुमटी, पेयजल कियोस्क, शेड एवं बैंचेंज, डस्टबिन
 - घण्टाघर- मोबाइल टॉयलेट फेसिलिटी, पर्यटक सहायता बल घुमटी का उन्नयन, पेयजल कियोस्क
 - महामन्दिर- सी.सी.टी.वी कैमरा, पेयजल कियोस्क, डस्टबिन
 - पंचकुण्डा की छतरियां- सी.सी.टी.वी कैमरा, पेयजल कियोस्क, टॉयलेट फेसिलिटी
 - राजकीय संग्रहालय, मण्डोर उद्यान- क्लॉक रूम, टॉयलेट फेसिलिटी का उन्नयन
 - सभी पर्यटक स्थलों पर साइनेज कार्य।
2. बस स्टैण्ड और बाजारों में पर्यटकों के लिए सेवाओं/सुविधाओं का उन्नयन-
रोड़वेज बस स्टैण्ड पर पर्यटक सहायता बल के लिए केबिन सुविधा
3. प्रमुख पर्यटक स्थलों के आसपास थीम आधारित अनुभवात्मक (स्वयं करने योग्य) गतिविधियां- खानपान, सांस्कृतिक, मनोरंजन आदि का विकास-
 - प्रमुख पर्यटक स्थल घण्टाघर पर पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पार्श्वक/मासिक रात्रि बाजार का आयोजन जिसमें लोक-कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां एवं फूड चौपाटी लगायी जा सकती है। उम्मेद उद्यान स्थित सरदार राजकीय संग्रहालय में पर्यटकों की संख्या में बढ़ोतरी के लिए संग्रहालय का समय बढ़ाया जाकर एवं फूड चौपाटी लगायी सकती है।



4. एंकर डेस्टिनेशन के आसपास वार्षिक कैलेंडरीकृत कार्यक्रम का आयोजन जैसे-मैराथन, संगीत या फिल्म समारोह, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि-
 - राजस्थान दिवस, जोधपुर स्थापना दिवस, विश्व पर्यटन दिवस एवं मारवाड़ समारोह के आयोजन के दौरान मेहरानगढ़ से हेरिटेज वॉक, रन फॉर जोधपुर एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम किये जाने प्रस्तावित है।
5. एनालॉग/डिजिटल आई.ई.सी. के माध्यम से राष्ट्रीय और वैश्विक मीडिया में अतुल्य राजस्थान को बढ़ावा देना-
 - पर्यटन मुख्यालय की मार्केटिंग शाखा द्वारा राजस्थान के समस्त पर्यटक स्थलों का व्यापक स्तर पर विभाग के सभी सोशल मीडिया हैंडल्स पर प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।
6. जिले के प्रतिष्ठित स्थानों/स्मारक/पेनोरमा पर स्थानीय किंवदंतियों/विरासत पर आधारित एक भव्य ब्रॉडबैशॉली सांस्कृतिक शो का आयोजन-
 - जोधपुर में वीर दुर्गादास पेनोरमा/मसूरिया पहाड़ी पर सांस्कृतिक शो का आयोजन किया जा सकता है।



“ यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में ‘विकसित भारत @2047’ के लिए ‘विकसित राजस्थान’ के लक्ष्य को साकार करने के लिए राज्य सरकार सतत प्रयास कर रही है। इस प्रयास में प्रदेश का हर निवासी भागीदार है। हमारे और आपके संयुक्त प्रयासों से ही हम हमारे प्रदेश और देश को विश्वभर में अग्रणी और विकसित बनाने में निश्चित रूप से सफल होंगे। ”

श्री भजनलाल शर्मा
मुख्यमंत्री, राजस्थान

जिला प्रशासन, जोधपुर

#हर_घर_खुशहाली